ISSN: 2249-7862 (Print) : 2455-877X (Online)
www.aureoleonline.in

अनुज लुगुन की कविता में आदिवासी विमर्श

Dr. Sobhitha Sebastian
Assistant Professor, Department of Hindi
St. Joseph's College (Autonomous), Moolamattom, Kerala
Email: sobhithasebastian@gmail.com

शोधसार

समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित, आदिवासी, स्त्री और अल्पसंख्यक समाज की स्थिति पर चिंतन होने लगा है। हमारे देश के मूल निवासी है आदिवासी। आदिवासी का अर्थ है जनजातीय समूहों का समुदाय, जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करते, एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं और इनकी एक सामान्य संस्कृति होती है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में आदिवासियों पर लेखनी चलाई गई हैं। अपने सृजनात्मक लेखन के द्वारा आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और मानसिक स्थिति को उजागर करनेवाले अनेक रचनाकार आज साहित्यिक फलक पर उभरकर आ रहे हैं। ऐसे रचनाकारों में प्रमुख हस्ताक्षर हैं - अनुज लुगुन। आदिवासी जीवन के बहु आयामों को अनुज लुगुन की कविताओं में देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने पूरे विश्व को बदल दिया है। इसका परिणाम आदिवासी जीवन पर भी पड़ा है। विकास का यह प्रवाह आदिवासियों के जीवन को तहस -नहस करने के कगार तक पहुँच चुका है। वर्तमान दौर में आदिवासी समाज की अस्मिता एवं संघर्ष का चित्रण अनुज लुगुन की कविताओं में बखूबी देखा जा सकता है।

बीज शब्द: आदिवासी, अस्मिता, पूंजीवादी, बाज़ारीकरण

विषय वस्तु

समकालीन आदिवासी साहित्यकारों में अनुज लुगुन का नाम उल्लेखनीय है। अनुज लुगुन की कविताओं में आदिवासी लोगों का स्वरूप और संघर्ष को बखूबी देखा जा सकता हैं। आज भी आदिवासी लोग जंगलों में अपनी ही संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था के साथ जीवित है। लेकिन आज पूँजीवादी समाज के कारण वे लोग खतरे में पड़ गये हैं। वे अपने अस्तित्व जंगल, ज़मीन और अस्मिता को बचाने के लिए लड़ रहे हैं। पूँजीवादी और बाज़ारवादी नीतियां विकास के नाम पर आदिवासियों का शोषण करते है और उसे अपनी भूमि से निष्कासित करते हैं। अनुज लुगुन अपनी कविता 'अघोषित उलगुलान' में कहते है –

"लड़ रहे है आदिवासी
अघोषित उलगुलान में
कट रहे है वृक्ष
माफियाओं की कुल्हाड़ी से और
बढ़ रहे है कंक्रीटों के जंगल
दान्डू जाए तो कहाँ जाए
कटते जंगल में या बढ़ते जंगल में"[1]

संपूर्ण मानव जाति के लिए खतरनाक समस्या है विकिरण। विकिरण का मुख्य कारण है कोयला खनन। आदिवासी इलाके में होनेवाले विकिरण की समस्या का मुख्य ज़िम्मेदार खनन है। घने जंगलों और पहाड़ों से संपन्न आदिवासियों का ज़मीन खनिज सम्पदाओं का भण्डार है, आज जिनका लूट -मार त्वरित गति से चल रहा है। अनुज लुगुन की कविता 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी' में इस समस्या को चित्रित किया है।

"वह यूरेनियम जादूगोड़ा का ही था
वही लोग थे ,वही ज़मीन थी
कोई लूटा हो गया था
कोई लंगड़ा गया था"[2]

आदिवासी लोग प्रकृति को ईश्वर मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं। वे प्रकृति के साथ मेल -मिलाप कर जीना चाहते है। लेकिन सभ्य समाज अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए आदिवासी समाज को नुक्सान पहुंचा रहा है। आज प्राकृतिक खनिज संसाधनो से संपन्न जंगल से आदिवासियों को भागना पड़ रहा है। इस सच्चाई को कवि अनुज लुगुन ने अपनी कविता सुगुना मुण्डा की बेटी में बखूबी चित्रित किया है।

"नेपत्थ ध्वनि की तरह रह कर उठती है चीख
बच्चों की , औरतों की और बूढ़ों की तरह
उनके भागने की आहेत"[3]

पूंजीपतियों ने विकास के नाम पर आदिवासियों को अपनी भूमि से खेदेड़ फेंका है। विस्थापित होने वाले आदिवासियों को अपनी रोजी रोटी के सभी स्रोत खत्म हो जाते है। इस तरह आदिवासियों को बचाने या संरक्षण देने के लिए कोई संरक्षक नहीं आते हैं। इस तथ्य को अघोषित उलगुलान कविता में अनुज लुगुन ने प्रस्तुत किया है।

"कोई नहीं बोलता इनके हालात पर
कोई नहीं बोलता जंगलों से कटने पर
पहाडों के टूटने पर
नदियों के सूखने पर
ट्रेन की पटरी पर पड़ी
तुरिया की लावारिस लाश पर
कोई कुछ नहीं बोलता"[4]

यदि एक आदिवासी अपनी समस्याओं को लेकर विरोध प्रकट करते है उसे विकास विरोधी कहकर खदेड़ दिया जाता है। कवि अनुज लुगुन गुरिल्ले का आत्मकथन में कहते हैं -

"हम दुखी है कि हमारी पत्नी और बच्चे
फर्जी मुठभेड में मारे गए है
और दुख इससे भी ज्यादा यह है कि
यह बात पड़ोस के गाँव तक सही सही पहुंचने नहीं जा रही

हमारी पहचान द्वीप में भटके अटके नाविक की तरह हो रही है
बातें तो कैल रही है, लेकिन कानून के अनुच्छेदों की तरह
जिसकी दृष्टि के लिए बार-बार न्यायाधीशों की जरूरत होती है।"[5]

समकालीन हिन्दी काव्य जगत में आदिवासी और गैर आदिवासी साहित्यकारों ने मिलकर आदिवासी समाज में व्याप्त परेशानियों और समस्याओं को चित्रित करने की कोशिश की है। आज भी आदिवासी लोग अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए लड रहे हैं। उनकी लडाई विका सात्मक नीतियों और पूँजीवादी ताकतों से है। इन सभी समस्याओं को चित्रित करने में कवि अनुन लुगुन सक्ष्म दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

१. रमणिका गुप्ता- कलम को तीर होने दो -पृ:६६
२. अनुज लुगून -बाघ और सुगुना मुंडा की बेटी - पृ; ९०
३. वही -- पृ: ४८
४. रमणिका गुप्ता-कलम को तीर होने दो -पृ: ६५
५. रमणिका गुप्ता- पूर्वोक्त -पृ:७४